[श्री कैलाश पति मिश्र]

पैर रखने के बाद राज्य की सीमा में बहुत ही कष्ट होता है । भारत के 23 राज्यों में से प्रति व्यक्ति आय जिस राज्य की सबसे कम है उस राज्य से हम लोग आते हैं ?. हम 23 वें स्थान पर पहुंच गये हैं । बिहार कैसा है चर्चा बहुत हो गई है । 42 प्रतिशत खनिज पदार्थ भारत में अकेले बिहार राज्य से निलकर आता है । नदियों का जाल बिछा हुआ है और चला जा रहा है नीचे, चला जा रहा है नीचे । आप द्वितीय अनुपूरक विधेयक 3 हजार 38 करोड़ रुपये का लाये । मैं जरा पूछना चाहता हूं कि सब से पीछे जो राज्य रह गया या उससे भी जो ऊपर थोड़े से रह गये लेकिन वे पिछड़े हुये हैं उनके लिये आपने क्या किया है ? क्या इससे देश बनेगा ? मौलिक चिंतन करने की जरूरत है । इससे वह राज्य ही केवल पीछे नहीं छूटे हैं बल्कि इससे देश पीछे छूटता चला जा रहा है । बिहार की हालत क्या है ? अराजकता हो रही है, रोज हत्यायें हो रही हैं, सड़क पर चलने के लिये सड़क नहीं है, चढ़ने के लिये बस नहीं है, रेल गाड़ी में बैठने के लिये डिब्बे में जगह नहीं है । रेलवे की पटरी नहीं है । आप उस ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं । बम्बई पर चर्चा होती है, आगे बढ़े हुये राज्यों पर चर्चा होती है । उनका विकास हो उससे मेरा कोई संबंध नहीं है । लेकिन इतनी घनी आबादी के इलाके वाला आज पूरा बिहार अंधेरे में डूबा हुआ है । वहां पर बिजली नहीं है, वहां पर रोशनी नहीं है । कारखाने एक के बाद एक बन्द होते चले जा रहे हैं । महोदय, मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता है और सब से अधिक मुझे खतरा दिखाई दे रहा है कि सरकार जिस रास्ते पर दौड़ रही है और उसका आर्थिक कंट्रोल समाप्त हो गया है, पूर्णत: समाप्त हो गया है । आधा साल बीतते-बीतते आप लगभग सवा सात हजार करोड़ के घाटे पर आकर खड़े हो गये हैं । अभी चार महीने और आगे दिखाई देते हैं । इन चार महीनों के बाद फिर सप्लीमेंट्री बजट आयेगा, फिर मूल्य सूचकांक में वृद्धि होगी और फिर मुद्रा-स्फीति में वृद्धि होगी । फिर हर उपभोक्ता चीजों के दाम बढ़ेंगे । फिर फोर्थ-पे कमीशन की रिकमेंडेन्शन को एक्सैप्ट करने से काम नहीं चलेगा । महंगाई बढ़ेगी, मांग उठेगी । फिर मांग उठेगी । थोड़े दिन तक आप रेजिस्ट करेंगे । फिर हड़ताल होगी । फिर उसके सामने आप झुकेंगे । फिर झुकेंगे और आपको टी०ए० डी०ए० बढ़ाना पड़ेगा । फिर मुद्रा-स्फीति बढ़ती चली जायगी । क्या कभी आप विचार करते हैं ? क्या हिम्मत के साथ आगे आप यह घोषित करने के लिये तैयार हैं कि आवश्यक उपभोक्ता वस्तुओं की कीमत इसके बाद आगे नहीं जायेंगी । मुझे लगता है कि सरकार की क्षमता समाप्त हो गई है, शक्ति समाप्त हो गई है । वह मुट्ठी भर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के हाथ में आकर फंस गई है, कुछ मुट्ठी भर पूंजीपतियों के हाथ में आकर फंस गई है । उनके लिये खुला दरवाजा है । **(व्यवधान)**

मैं जानता हूं कि जो मित्र बीच में इंटरफीयर कर रहे हैं उनको यह पसन्द नहीं है क्योंकि देश के दरिद्र भाग को वे देखने के लिये तैयार नहीं हैं । इन्हीं शब्दों के साथ मैं इस अनुपूरक विधेयक का विरोध करता हूं ।

PAPERS LAID ON THE TABLE

I Delhi Declaration signed by the Prime Minister shri Rajiv Gandhi and his Excellency Genera] Secretary Mildiail Gorbachev on principles for a nuclear— weapon free and non violent world;

II. Agreement on economic and tech nical cooperation between India and USSR; and

III. Note on Consular conventionbet ween India and USSR signed by theEx ternal Affairs Minister of India andFo reign Minister of USSR.

THE MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI NARAYAN DATT TIWARI): Mr. Vice-Chairman, Sir, I beg to lay on the Table a copy each of the following papers: —

I. Delhi Declaration signed by the Prime Minister Shri Rajiv Gandhi and His Excellency General Secretary Mikhail S. Gorbachev on principles

for a nuclear-weapon free and non-violent World.

2. Agreement on economic and te chnical cooperation between India and USSR; and

3. A note OQ Consular Convention between India and USSR signed by the External Aflairs Minister of India and Foreign Minister of USSR.

[Placed in Library. *See* No. LT-3320| 86 for 1 to 3].

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. P. KAUSHIK): Shri Kapil Verma. *(Interruption).*

SHRI M. S. GURUPADASWAMY Mr. Vice-Chairman, Sir, I am not saying anything at all. I am just requesting Whether we will have sometime to seek clarifications on this statements.

THE VICECHAIRMAN (SHRI M. P. KAUSHIK); No, no. Shri Kapil Verma.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: (Andhra Pradesh): Will we get some time to seek clarifications *(. Interruptions!*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. P. KAUSHIK). You will get the answer later. *(Interruptions)*

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: I would like to know whether any time will be allotted to seek clarifications.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. P. KAUSHIK): No clarifications now. They were only papers laid on the Table. You put up whatever you want to do to the Chairman. He will give a ruling. Now, Mr. Kapil Verma.

THE APPROPRIATION (NO. 5 BILL, 1986—CONTD.

SHRI KAPIL VERMA (Uttar Pradesh); Sir, I rise to support the Appropriation Bill. The hon. Minister of External Affairs just now tabled copies of certain agreements which are most welcome to us. I congratul^ the Prime Minister and the Exteriul Affairs Minis ter and General Secretary Gorbachev for these agreements. I

Sir, an item which is most relevent in the supplementary budget—and this is on issue which is uppermost in the minds of all Indians today and the people of Asia also—is that there is a provision of Rs. 932 crores for defence, with Rs. 811 crores on the revenue side and Rs. 121 crores on the capital side. The nation is facing a grave threat today because of the situation on the borders. The latest news which many people may not be knowing is that President Reagan, while receiving the Pakistan Ambassador yesterday in Washington, announced a new package of 3. 4 billion dollars to Pakistan. More than that, the statement he madewas more significant. The statement was that the US must strengthen Pakistan's defences because Pakistan shared the perceptions of the US about foreign policy. Now the timing of the announcement by President Reagan of the new package and the statement he has made about Pakistan sharing the perceptions of the US about foreign policy, despite the so-called non-aligned status of Pakistan, is very significant. In a way, I must say, Reagan has tried to influence India and the Soviet Union and has tried to tell us that the Us is solidly behind Pakistan. In any case, India has no designs On any one of its neighbours. In fact, we are committeed to a policy of non-alignment and true neutrality between the two power blocs. We want to stand erect. But as the great US commentator Selig Harrison has said, Mr. Reagan's new supplies of arms to Pakistan has created a wave of bitterness in India. Well, America has to thank itself for this. We do not want to lean on either side and we still stand erect. If there i^ a wave of bitterness in India and if the people of India have given a very warm welcome to General Secertary Gorbachev, it is because America has been trying to go out of its way to help Pakistan. We India and the Soviet Union, have different economic systems and different po-' litic'al systems. But Russia has always